विद्यार्थी असंतोष : उच्च शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन

अश्वनी

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मौलाना आज़ाद नेषनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

Email: ashwani2tanwar@yahoo.co.in

सारांश

किसी भी देश की प्रगति अपनी युवा पीढ़ी की मेहनत और उसके समर्पण पर निर्भर करती है। विद्यार्थी किसी भी समाज की प्रगति के भविष्य की आधारशिला है। विद्यार्थियों को हर दौर में एक महान शक्ति के रूप में मान्यता दी गई है। विद्यार्थियों में बढ़ता असंतोष इस कारण एक चिंता का विषय बन जाता है कि भविष्य भी हमारा चिंताग्रस्त होगा। वर्तमान में विद्यार्थियों में चिंताजनक स्थिति का अनुपात बढ़ रहा है। विद्यार्थी असंतोष हमारी शिक्षा प्रणाली के लिए एक अच्छा संकेत नहीं है यदि ये बढ़ जाता है तो विद्यार्थी हिंसा, सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट करना व आगजनी में शामिल हो जाते हैं। यदि विद्यार्थियों को इन अवांछनीय गतिविधियों और अनुशासनहीनता करने की अनुमति दी जाती है, तो पूरी शिक्षा व्यवस्था तहस–नहस हो जाएगी। उपरोक्त संदर्भ ओर विद्यार्थियों में बढ़ते असंतोष की समस्याओं को ध्यान में रखकर इस शोध पत्र में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द *– विद्यार्थी असंतोष, उच्च शिक्षा*

प्रस्तावना

विद्यार्थी असंतोष केवल भारत तक ही सीमित नहीं है। यह दुनिया भर में एक समस्या है। विद्यार्थी असंतोष आंदोलन, हड़ताल, कक्षाओं का बहिष्कार विभिन्न रूपों में हमारे सामने स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षिक और प्रशिक्षण संस्थानों में आते हैं। विद्यार्थी असंतोष में मौजूदा मानदंडों में बदलाव के लिए शैक्षिक संस्थानों में सामूहिक असंतोषजनक व दुविधाजनक स्थिति होती है। विद्यार्थियों में असंतोष हताशा और अभाव, नेतृत्व का उदभव, कार्रवाई के लिए जुटना और उत्तेजनाओं के लिए सामूहिक प्रतिक्रिया, विद्यार्थियों में आंदोलन के दौरान उनके व्यवहार में अन्याय के प्रति भावना इत्यादि दिखाई देता हैं। विद्यार्थी असंतोष पर किए गये अध्ययनों से पता चलता है कि विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के रूप में अवज्ञा, शिक्षकों और बड़ों के प्रति अनादर, संस्थान के मानदंडों से सहमत न होना, नियंत्रण स्वीकार करने से इनकार करना और वर्तमान सामजिक मूल्यों व मानदंडों को अस्वीकार करने के रूप में परिभाषित किया गया है।

विद्यार्थी वर्तमान शिक्षा और शैक्षणिक संस्थान के लक्ष्यों में रूचि खो देते हैं और इसके मानदंडों का पालन नहीं करते हैं। विद्यार्थी को यह विश्वास नहीं होता है कि संस्थान उनके लक्ष्यों

शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II pp (442-451) April - June 2019

को प्राप्त करने में सक्षम है इसलिए वे अपने मानदंडों से भटक कर संस्था को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं इसी कारण विद्यार्थी मानदंडों में बदलाव चाहते हैं। विद्यार्थियों के विरोध प्रदर्शन कभी–कभी आक्रामक आंदोलन के कारण बनते हैं जिसका उद्देश्य नुकसान, चोट या विनाश करना है। आंदोलन से सत्ता में लोगों को सूचित करना और ध्यानाकर्षण करना रहता है। आंदोलन केवल विरोध प्रदर्शन के लिए होता है। विद्यार्थियों के आंदोलन के विभिन्न रूप हैं – प्रदर्शन, चिल्लाना, हड़ताल, भूख हड़ताल, परीक्षाओं का बहिष्कार इत्यादि।

विश्वविद्यालय आयोग द्वारा बनाई समिति ने 1960 में विद्यार्थियों में असंतोष और आंदोलन के निम्न कारण बताए हैं।

- आर्थिक कारणों से, जैसे फीस वापस करने की मांग, छात्रवषत्ति बढ़ाना।
- प्रवेश, परीक्षा और शिक्षण से संबंधित वर्तमान मानदंडों में बदलाव की मांग।
- कॉलेजों व विश्वविद्यालयों की असंतोषजनक कार्यप्रणाली।
- विद्यार्थी और अध्यापक के बीच के संबंध, विद्यार्थियों व विद्यार्थी नेताओं के साथ उचित व्यवहार न होना, कक्षाओं की कमी।
- संस्थान के परिसर में अपर्याप्त सुविधाएं, अपर्याप्त छात्रावास, छात्रावासों में खराब भोजन, कैंटीन की कमी आदि।
- राजनेताओं के द्वारा उकसाए जा रहे विद्यार्थी नेता।

सैद्धांतिक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, विद्यार्थी के आंदोलन को अंसतुलित सिद्धांत के आधार पर बहिष्कृत किया गया है (आंदोलन असंतोष और अन्याय की भावना में निहित है), आंदोलन व्यक्तिगत जीवन में विफलता की शरण है।

बी.वी.शाह (1968) ने गुजरात में विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के अध्ययन में पाया कि –

- सामाजिक रूप से अलग–थलग यानि जो अपने आपको समाज से कटा हुआ महसूस करते है।
- व्यक्तिगत रूप से जो अपने जीवन से संतुष्ट नहीं हैं। अपने जीवन का कोई उद्देश्य या भूमिका नहीं बना पाए हैं और उन्हें पढ़ाई में पर्याप्त रूचि नहीं है।
- परिवार के प्रति लगाव नहीं है अर्थात जिनके परिवारों के साथ अंतरंग संबंधों का अभाव है।
- जो अपनी जाति, धर्म, भाषाई समूह के साथ पूरी तरह से मिले हुए नहीं है इसलिए वे अलग थलग है।
- प्रवासी या घूमंतू जिनके पास बड़े समुदाय में एकीकष्त होने की बहुत कम संभावना है। कारण
- परीक्षाओं के दौरन अनुचित साधनों का उपयोग करते हैं।
- अपने अध्यापकों व गैर शिक्षण कर्मचारियों को मान सम्मान नहीं करते हैं।
- अपने साथ मारपीट करने वालों को धमकी देते हैं।
- वे अधिक स्वतंत्रता व अपने अनुसार अधिकार चाहते हैं जो कि वैध नहीं कहे जा सकते

है।

विद्यार्थी असंतोष के कारण –

शैक्षिक संस्थान में शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा प्रशासन के मध्य समन्वय व संवाद की कमी – विद्यार्थी असंतोष का मुख्य कारण शैक्षिक संस्थान में शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा प्रशासन के मध्य समन्वय व संवाद की कमी है। विद्यार्थी को अपने संस्थान की सुविधाओं व सीमाओं का पता नहीं होता है। प्रशासन अपने आप को बड़ा व उच्च समझकर विद्यार्थियों से संवाद नहीं करता है जिस कारण परायेपन का वातावरण पैदा होता है। यह अलगाव का वातावरण असंतोष पैदा करता है।

दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली –

प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में किसी भी तरह का जुड़ाव व संबंध नहीं है। विभिन्न राज्यों व केंद्रीय शैक्षिक संस्थानों में भी आपसी तालमेल का अभाव रहता है। पाठ्यक्रमों के निर्माण में असमानता, शिक्षकों की नियुक्ति में अभाव व नियमों का पालन नहीं करना, बच्चों की रूचि व भविष्य के अनुसार शिक्षा उपलब्ध नहीं होना, पाठ्यविषयवस्तु और समाज में संबंध की कमी इत्यादि है जो कि दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली की देन है।

जीवन का उद्देश्यविहीन और अनिश्चित भविष्य –

आज का विद्यार्थी ऐसी शिक्षा चाहता है जो कि उसका भविष्य रोजगारोन्मुख बनाएं। शिक्षा का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक संदर्भ केवल अब शिक्षा के व्यावसायीकरण की और बढ़ रहा है। शिक्षा अब विद्यार्थी को केवल यांत्रिक तौर पर विकसित कर रही है। शिक्षा जीवन का विकास करने की जगह अब नौकरीपेशा मनुष्य विकसित करने की और अग्रसर रहती है। इस तरह आज विद्यार्थी के जीवननिर्माण के लिए नैतिक मूल्यों, सामाजिक व मानसिक विकास का उद्देश्य कहीं न कहीं पीछे रह गया है। इस तरह विद्यार्थी का सर्वांगींण विकास नहीं होता जिससे पूरा जीवन ही अनिश्चित हो जाता है।

आर्थिक समस्याएं –

पारिवारिक–आर्थिक समस्याएं व शिक्षा के निजीकरण से भी विद्यार्थियों में आर्थिक कारणों से असंतोष बढ़ता जा रहा हैं। समय पर फीस न देना, हॉस्टल की फीस, छात्रवृत्तियों का अभाव व मंहगे प्राइवेट शिक्षण संस्थान के कारण विद्यार्थी भी चिंता व अवसाद से ग्रसित हो जाता है।

कक्षाओं में बढ़ती विद्यार्थियों की संख्या –

उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही हैं। विद्यार्थियों के अनुपात में सुविधाएं व अध्यापकों की कमी है जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी उपलब्ध नही हो पाती है जो कि विद्यार्थी असंतोष का मुख्य कारण बनती है।

दोषपूर्ण शिक्षण विधियां –

सूचना व संप्रेषण के दौर में शिक्षण विधियों में बहुत बदलाव आया हैं परंतु अभी भी हमारे अध्यापक अद्यतन शिक्षण विधियों से परिचित नहीं है। आई.सी.टी के दौर में शैक्षिक संस्थानों

के पास इंटरनेट, स्मॉर्ट क्लासरूम व कम्पयूटर की सुविधाएं कक्षा में उपलब्ध नहीं है। अध्यापकों को भी नई शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण नहीं दिया गया हैं जिससे विद्यार्थी विषयवस्तु की समझ नहीं बना पाता है जो कि आगे चलकर असंतोष का रूप धारण कर लेती हैं।

पारिवारिक समस्याएं –

विद्यार्थी की अपनी पारिवारिक समस्याएं भी उसे मनोवेज्ञानिक रूप से परेशान करती है। आर्थिक समस्याएं, परिवार का सामाजिक अलगाव, माता–पिता के कटु संबंध, परिवार पर कर्ज का बोझ आदि भी विद्यार्थियों के मन को अशांत करती है।

सक्षम व प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी –

अभी भी उच्च शिक्षा संस्थानों में तदर्थ व अनुबंध पर आधारित अध्यापकों की संख्या ज्यादा है जो कि पूरी तरह से सक्षम व प्रशिक्षित नहीं होते है। सेवाकालीन प्रशिक्षण की भी अध्यापकों के लिए कमी रहती हैं। इस तरह विषयविशेषज्ञ व प्रशिक्षित अध्यापकों की अनुपलब्धता से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाती है जो विद्यार्थी में भविष्य को लेकर दिन रात की चिंता पैदा करती है।

विद्यार्थियों की यूनियन व संघों का अभाव –

उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थी यूनियन को सकारात्मक दर्ष्टिकोण से नहीं देखा जाता है। ज्यादातर संस्थानों में यूनियन व संघों का अभाव रहता है जिस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याओं को प्रस्तुत नहीं कर पाते है। विद्यार्थी यूनियन से विद्यार्थियों को अपनी चिंताओं व समस्याओं को प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है जिससे उनमें असंतोष की कमी आती है।

सांस्कृतिक गतिविधियों व सह–पाठ्यचर्या व रचनात्मक गतिविधियों की कमी –

उच्च शैक्षिक संस्थानों में सांस्कृतिक गतिविधियों का समय समय पर आयोजन होना जरूरी है जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मकता, सहयोग व भाईचारा, समय का सदुपयोग, टीम वर्क आदि की भावनाएं पैदा होती है। एक दूसरे को समझने व मन से नीरसता को भगा कर उमंग पैदा करने का सबसे अच्छा उपाय सांस्कर्षतिक गतिविधियों का आयोजन हैं। मन शांत व सकारात्मकता की ओर बढ़ता है जिससे विद्यार्थियों में असंतोष की कमी आती है।

दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली –

समय पर वार्षिक परीक्षा का आयोजन नहीं होना, परीक्षा परिणाम घोषित करने में देरी, परीक्षा परिणाम सही नहीं आना, मूल्यांकन में कमियां इत्यादि कारणों से भी विद्यार्थियों में असंतोष बढ़ता है। प्रश्न पत्र विद्यार्थी के स्तर के अनुरूप नहीं बनाना। दाखिला परीक्षा में पारदर्शिता नहीं होना इत्यादि कारणों से भी असंतोष बढ़ता है।

सामाजिक अनुशासनहीनता –

यदि विद्यार्थी समाज में अनुशासन सीखता है तो वह उसका पालन शैक्षिक संस्थान में भी करेगा यदि समाज में उत्पात, अहिंसा, साम्प्रदायिकता, असमानता आदि का माहौल रहता है तो विद्यार्थी का मन भी अशांत हो जाएगा जिसका प्रभाव हमें शैक्षिक संस्थान परिसर में दिखाई देगा।

शैक्षिक संस्थानों में पर्याप्त निधि व अनुदान की कमी –

शैक्षिक संस्थानों में पर्याप्त निधि व अनुदान की कमी रहती है जिस कारण विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व सुविधाएं नहीं मिल पाती है। सरकारी संस्थानों में इस कारण अच्छे अध्यापकों की भर्ती भी नहीं हो पाती हैं। ज्यादातर निजी संस्थानों में भी मंहगी शिक्षा होने के बावजूद प्रशिक्षित अध्यापक व सुविधाओं की कमी रहती है जिससे विद्यार्थियों में असंतोष पैदा होता है।

सोशल मीडिया –

आज के समय में मनुष्य की ज़िदगी का सोशल मीडिया अहम हिस्सा हो गया है। विद्यार्थी अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। समसामयिक गतिविधियों की जानकारी भी सोशल मीडिया के द्वारा विद्यार्थी बहुत ही तेजगति से हासिल कर रहे है। सोशल मीडिया के द्वारा विद्यार्थियों में गलतफहमियां, अशांति व असंतोष भी फैलाया जाता है। सोशल मीडिया पर दी गई जानकारियों व पोस्ट की वैधता को किस तरह जांचा जाएं ये एक चिंता का विषय है क्योंकि गलत पोस्ट के कारण विद्यार्थी भी उन पर विश्वास करके असंतोष का शिकार हो जाते है। स्मार्टफोन के कारण आज ज्यादातर विद्यार्थी अपना समय व्हटसऐप, फेसबुक, यू टयूब इत्यादि पर अपना समय बर्बाद करता रहता है जिस कारण उसका स्वास्थ्य, समय, पढ़ाई पर भी प्रभाव पड़ता है।

सुझाव व समाधान

शैक्षिक संस्थानों में जातीय, धार्मिक, रंग, नस्लीय व लैंगिक तरह के कारण और प्रतिक्रियाएं उच्च शिक्षा नेतृत्व के लिए चिंता का विषय हैं। जो संस्थान इस तरह के मुद्दों को नहीं सुनते है तो उच्च शिक्षा नेतृत्व के लिए बड़ी समस्या बन जाती हैं। तनाव के समय में, एक शांत और विश्वसनीय आवाज महत्वपूर्ण होती है। इस माहौल में पुलिसिया व्यवहार से काम नहीं चल सकता हैं इससे भी अधिक तनाव हो सकता है। विभिन्न शैक्षिक संस्थानों में पुलिस हस्तक्षेप के बारे में नियमावली तैयार करनी चाहिए। शांत माहौल में विद्यार्थियों में विश्वास को विकसित करने की जरूरत है। यदि संस्थान में जातीय, धार्मिक, रंग, नस्लीय व लैंगिक तरह के भेदभावों पर कोई असंतोष व आंदोलन होता है तो संस्थान को इस तरह की समस्याओं के समाधान के लिए मानचित्र तैयार कर लेना चाहिए। विद्यार्थी व प्रशासन के बीच संचार व संप्रेषण के लिए माहौल हमेशा रहना चाहिए। संकट समाधान के लिए एक कोर टीम होनी चाहिए जो कि मीडिया व विद्यार्थियों के बीच में संपर्क बनायें। संकट समाधान टीम के प्रत्येक सदस्य का फोन नंबर हमेशा वैबसाइट पर अपडेट रखने चाहिए। कुछ मुख्य प्रश्नों व समस्याओं के कारण व समाधान को वैबसाइट पर अपडेट कर देना चाहिए जिससे सभी के बीच में जानकारी साझा हो।

संस्थान के शैक्षिक व गैर शिक्षण स्टाफ को संस्थान में घूम घूम कर प्रबंधन का अभ्यास करना चाहिए। यह प्रक्रिया विद्यार्थियों के विश्वास को प्राप्त करने और सुनने में मदद करती है। किसी भी तरह की समस्या आ जाने पर संस्थान स्टाफ को विद्यार्थी असंतोष के बारे में बातचीत के दौरान विद्यार्थियों को सुनना और संलग्न करना चाहिए। विद्यार्थियों के साथ अनौपचारिक तौर

पर रिश्ते बनाने चाहिए जैसे कि नाश्ते और दोपहर के भोजन को साझा करना, लॉन में विद्यार्थियों की चर्चाओं में शामिल होना, सामाजिक मंच और डाइनिंग हॉल में विद्यार्थियों से बातचीत करनी चाहिए। शैक्षिक संस्थानों में नेतृत्व की प्रबंधन शैलियों से भी विद्यार्थी असंतोष का पता चलता है। निरंकुश प्रबंधन शैली व लोकतांत्रिक प्रबंधन शैलियों के प्रभाव को स्पष्ट तौर पर विद्यार्थी असंतोष मे देख सकते हैं। संस्थानों में स्पष्ट प्रबंधन शैली का होना जरूरी है। संस्थान के परिसर मे अशांति व असंतोष फैलने व बढ़ने की स्थिति में संस्थान को हमेशा त्वरित तौर पर अशांति व असंतोष को दूर करने का प्रबंध करना चाहिए। मार्गदर्शन व परामर्श के माध्यम से विद्यार्थियों के उत्साह व उर्जा का सही तरह से इस्तेमाल कर सकते हैं। विद्यार्थियों की समस्याओं को बिना कुछ देरी किए जल्द से जल्द दूर करना चाहिए।

शैक्षिक संस्थानों में विविधता का माहौल बनाना चाहिए यदि कैंपस में विविधता नही है तो उसे बढ़ाने के लिए कोशिश होनी चाहिए। बहुसांस्कृतिक स्टाफिंग, विद्यार्थियों के विभिन्न विषयों व कक्षाओं में, संस्थान व परिसर में होनी चाहिए। 1986 की शिक्षा नीति में कहा गया है कि " राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था पूरे देश के लिये एक राष्ट्रीय शिक्षाक्रम के ढांचे पर आधारित होगी जिसमें एक *"सामान्य केंद्रिक" (कॉमन कोर) होगा और अन्य हिस्सों की बाबत लचीलापन रहेगा, जिन्हें स्थानीय पर्यावरण तथा परिवेश के अनुसार ढाला जा सकेगा। "सामान्य केंद्रिक" में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, संवैधानिक जिम्मेदारियों तथा राष्ट्रीय अस्मिता से संबंधित अनिवार्य तत्व शामिल होंगे। ये मुद्दे किसी एक विषय का हिस्सा न होकर लगभग सभी विषयों में पिरोये जाएंगे। इनके द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों की हर इंसान की सोच और ज़िंदगी का हिस्सा बनाने की कोशिश की जायेगी। इन राष्ट्रीय मूल्यों में ये बातें शामिल हैं : हमारी समान सांस्कृतिक धरोहर, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, स्त्री–पुरुषों के बीच समानता, पर्यावरण का संरक्षण, सामाजिक समता, सीमित परिवार का महत्व और वैज्ञानिक तरीके के अमल की जरूरत। यह सुनिश्चित किया जायेगा कि सभी शैक्षिक कार्यक्रम धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों के अनुरूप ही आयोजित हों"।* वास्तव में सामाजिक माहौल और जन्म के संयोग से उत्पन्न पूर्वाग्रह और कुंठाएं दूर हो। संस्थानों में सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए जिससे विद्यार्थी आपसी भाईचारा व एक टीम में काम करने का महत्व समझ पायें। आज वैश्वीकरण के दौर में हम केवल अपनी संस्कृति की जानकारी तक ही सीमित नहीं रह सकते है। विभिन्न देशों की संस्कृति, आचार–विचार व धर्म संबधी मूल्यों व आदर्शो का ज्ञान व समझ भी विश्वविद्यालय स्तर पर देनी जरूरी है। सहपाठ्यक्रम गतिविधियों के आयोजन से विद्यार्थियों में मनोरंजन व आपसी समझ को बढ़ावा मिलेगा।

संस्थान में विभिन्न समयों पर हुई विद्यार्थियों की चर्चाओं के संदर्भ को बताना चाहिए व संस्थान के संदेश को सभी तक पहुंचाने के लिए प्रकाशनों और वेबसाइट का उपयोग करना चाहिए। विद्यार्थियों की सिफारिशों को तर्क के साथ स्पष्ट करना चाहिए। संस्थान की मासिक, त्रिमासिक आधार पर अपनी पत्रिका का प्रकाशन करना चाहिए जिसमें विद्यार्थियों को अपने संस्थान की गतिविधियों व विकास की जानकारी मिल सकेगी जिससे वे भावनात्मक रूप से

अपने आपकों संस्थान से जोड़ सकेंगे। आज इंटरनेट व सूचना प्रोद्यौगिकी के दौर में संस्थान को ज्यादातर अपनी जानकारी व सुविधाएं ऑनलाइन उपलब्ध करवानी चाहिए। संस्थान को अपनी वेबसाइट को हमेशा अद्यतन बनाकर रखना चाहिए। छात्रवृति, हॉस्टल की व टयूशन फीस जमा करना इस तरह विद्यार्थियों को प्रवेश संबंधी प्रक्रिया से लेकर परीक्षा से पास होकर जाने तक सभी तरह की सुविधाएं ऑनलाइन होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों के समय की बचत व आसानी होगी।

सोशल मीडिया प्रोटोकॉल बनाना चाहिए जिससे कि बेवजह की जानकारी से गलतफहमी ना फैले। सोशल मीडिया के द्वारा भी आज के समय में अनावश्यक बातों को फैलाया जाता है। फेसबुक, व्हटसऐप, टिवटर इत्यादि के द्वारा विद्यार्थियों में गलतफहमियां फैलाकर विद्यार्थियों में असंतोष पैदा किया जाता है। संस्थान को सोशल मीडिया के इस्तेमाल और उन पर दिए गये विचारों को पढ़कर कर विश्लेषण करना चाहिए। सोशल मीडिया पर क्या लिखना चाहिए और विभिन्न पोस्ट किए गये विचारों का विश्लेषण करके उन पर क्या प्रतिक्रिया दें इस पर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना चाहिए। सोशल मीडिया के बारे में अध्ययन को विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम का अहम हिस्सा बनाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के अंदर चेतना व जागरूकता होगी और वे गहतफहमी का शिकार नहीं होंगे।

स्वानुशासन अर्थात जब विद्यार्थी स्वेच्छा से उचित मार्ग पर चले और संस्थान के द्वारा कुछ करने को कहा जाए तो उसका औचित्य और आवश्यकता को समझे। नियंत्रण का केंद्र व्यक्ति के अंदर है बाहर नहीं। इस तरह अनुशासन से विद्यार्थी का शरीर, मस्तिष्क व आत्मा को प्रशिक्षित करना है। इस तरह अनुशासन केवल संस्थान में ही नही बल्कि जीवन में होना चाहिए। विद्यार्थी संस्थान से बाहर जाकर भी अनुशासित स्वानुशासन से रह सकता है। विद्यार्थियों को योजनाओं को बनाने में, उन निर्णयों को लेने में जो उनसे सबंधित हों में शामिल करके हम उनमें स्वानुशासन को पैदा कर सकते है। अध्यापकों, प्राचार्यों कुलपतियों सभी को विद्यार्थियों के प्रति अपने व्यवहार में सहानुभूति, सदभाव, पारस्परिकता और औचित्य से काम लेना चाहिए पर साथ ही आवश्यकता पड़ने पर अटल और अडिग बने रहना चाहिए।

हर शैक्षिक संस्थान में शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा प्रशासन के मध्य वर्ग विभाजन नहीं होना चाहिए। इस दृष्टि से संयुक्त समितियों की स्थापना होनी चाहिए। कुलपति/प्रिंसीपल की अध्यक्षता में शिक्षकों और विद्यार्थियों की एक केंद्रीय समिति होनी चाहिए। विद्यार्थियों को एकेडमिक काउंसिल व एकेडमिक कोर्ट में स्थान मिलना चाहिए। जिससे विद्यार्थी निर्णय निर्माण की संस्थाओं में भाग ले सकते हैं। कुलानुशासक के द्वारा समय समय पर विद्यार्थियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने चाहिए जिससे वे जीवन के विकास में अनुशासन का महत्व समझ सकें। संस्थान के अध्यापक, स्टाफ, अभिभावक, पूर्व विद्यार्थी, दाताओं, स्थानीय कानून के अधिकारी, क्षेत्रीय व राज्य के राजनेताओं सहित महत्वपूर्ण लोगों के साथ विद्यार्थियों की संवाद की योजना होनी चाहिए।

विद्यार्थियों को संस्थान में कक्षाओं के अतिरिक्त दूसरी सेवाएं भी उपलब्ध होनी चाहिए जैसे स्वास्थ्य सेवाएं, हॉस्टल, मार्गदर्शन और परामर्श जिसमें कैरियर भी शामिल हो, जॉब मेला व छात्रवृत्ति का समय पर मिलना इत्यादि से हम विद्यार्थियों में असंतोष कम कर सकते है। विद्यार्थियों को संस्थानों में दाखिले के समय सभी तरह की सूचनाएं व जानकारी देनी चाहिए जिससे वे संस्थान के नियमों से भलीभांति परिचित हो सके। संस्थानों में विद्यार्थियों का हर सत्र में उन्मुखीकरण कार्यक्रम होना चाहिए जिससे उन्हें सही दिशा मिल सकें।

संस्थानों में शिक्षकों व विद्यार्थियों की संख्या में उचित अनुपात होना चाहिए। यदि विद्यार्थियों की संख्या ज्यादा है तो अध्यापकों के साथ विद्यार्थियों का संपर्क नहीं हो पाएगा। यदि केंद्रीय विश्वविद्यालयों के स्थायी अध्यापकों के आंकड़ों का अध्ययन करें तो बहुत सारी स्थायी नियुक्तियां नहीं हुई है। तदर्थ अध्यापक व अतिथि अध्यापकों के द्वारा उच्च शैक्षिक संस्थानों में पढ़ाया जा रहा है ये अध्यापक स्वंय अपनी समस्याओं से जूझते रहते हैं। इसलिए विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के अनुपात में अध्यापकों की भर्ती करनी चाहिए।

राजनैतिक दलों के द्वारा भी शैक्षिक संस्थाओं के कार्य में हस्तक्षेप किया जाता है। संस्थान के किसी भी अंदरूनी मामले को जाति, धर्म का रूप देकर संस्थानों में अपनी राजनीतिक रोटी सेंकी जाती है। विभिन्न राजनीतिक दलों के लिए एक आचार संहिता बनानी चाहिए जिससे कि वे अपने लाभों के लिए विद्यार्थियों को आंदोलन व अन्य गतिविधियों में शामिल नहीं करें। विद्यार्थी यूनियन भी राजनैतिक मुद्दों पर काम करती हैं क्योंकि उनका भी किसी ना किसी पार्टी से संबंध होता है। विश्वविद्यालयों में छात्र राजनीति के मानक व मानदंडों को बनाकर सख्ती से उनका पालन करना चाहिए। छात्र राजनीति विद्यार्थियों को भविष्य के लिए अनुभव प्रदान करें न कि अन्य विद्यार्थियों का भविष्य भी दांव पर लगा दें। पिछले चार–पांच वर्षों में विश्वविद्यालयों में राजनीतिक दखलअंदाजी विद्यार्थियों के अंदर असंतोष बढ़ा रही है। इस तरह शैक्षिक संस्थानों में राजनैतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

संस्थानों में रोजगारपरक पाठ्यक्रमों को पढ़ाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को यह विश्वास होना चाहिए कि जो पढ़ाई वे कर रहे हैं उसमें उनका भविष्य सुरक्षित है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। वैश्वीकरण के दौर में विश्व बाजार को ध्यान में रख कर पाठ्यक्रम बनाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों की समसामयिक दौर की आवश्यकताएं पूरी हों।

प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों की स्थिति अच्छी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी सोच समझ को अच्छी तरह विकसित कर सकें। अपने विषय के विशेषज्ञ व ज्ञाता, प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति करनी चाहिए जिनका अध्यापन केवल व्यवसाय न होकर जुनून व जोश से भरपूर हों।

नशीली दवाओं और मादक द्रव्यों के बढ़ते सेवन के कारण भी विद्यार्थी अपना सामाजिक, मानसिक व शारीरिक विकास नहीं कर पाते है। धन व समय की बर्बादी के कारण से उनमें असंतोष व चिंता–अवसाद की गंभीर बीमारियां पैदा होती है। नशे की लत विद्यार्थियों

में सामाजिक अलगाव पैदा करती हैं। शैक्षिक संस्थानों को जागरूकता कार्यक्रम विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों के लिए करने चाहिए जिससे वे नशीलाी दवाओं के सेवन से बच सकें।

आज विद्यार्थियों में अनावश्यक तौर पर एक उच्च स्तरीय प्रतियोगिता की भावना समाज व परिवार के द्वारा भर दी जाती है। समाज की विविधता को समझ कर हर तरह के कामों व व्यवसायों का मान सम्मान होना चाहिए। विद्यार्थियों के अंदर छोटा व बड़ा काम की भावना विकसित न करके स्वच्छ प्रतियोगिता व विकास की भावना विकसित करनी चाहिए। हमारे देश, राज्य, गांव–शहर का माहौल कैसा है वही किसी न किसी रूप में शिक्षण संस्थाओं में दिखाई देता है। हमारे सार्वजनिक जीवन की परिस्थितियां भी हमारे विद्यार्थियों में बैचेनी व अशांति पैदा कर सकती है। इसलिए सामाजिक संदर्भ के तौर पर भी विद्यार्थियों की सोच –समझ व तर्क शक्ति विकसित करनी चाहिए।

शिक्षा का स्वरूप समावेशी होना चाहिए। लड़कियों व महिलाओं की शिक्षा, अनुसूचित जाति व जनजातियों की शिक्षा, शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए दूसरे वर्ग व क्षेत्र, अल्पसंख्यक, शारीरिक रूप से चुनौती पूर्ण बच्चें आदि सभी को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालयों में सुविधाएं दाखिलें से लेकर पास होने तक विशेष तौर पर उपलब्ध होनी चाहिएं ताकि इन वर्गो के बच्चें पढ़ें व समाज के विकास में साथ चलकर हाथ बटा सकें।

स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक हर शैक्षिक संस्थान का समाज के साथ संबंध होना चाहिए। विद्यार्थी के समाजीकरण में शैक्षिक संस्थानों की अहम भूमिका होती हैं। यदि समाज और शैक्षिक संस्थानों में अलगाव की समस्या होगी तो छात्र असंतोष की समस्या बढ़ सकती है। पूरी शिक्षा व्यवस्था समाज की समस्याओं, जरूरतों व भविष्य पर आधारित होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी शिक्षा पूरी करने के बाद समाज के विकास में योगदान दे सकें। समुदाय के सदस्यों को भी पाठ्यक्रम निर्माण और शैक्षिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल करना चाहिए। शैक्षिक संस्थानों में सुविधाओं को लेकर समुदाय के लोग बहुत बड़ा योगदान दें सकते है। शैक्षिक संस्थानों के नेतृत्वकर्ता व शिक्षकों को सोच विचार कर इस पर काम करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. *राष्ट्रीय शिक्षा आयोग,* 1964–66, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. *गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया (1985) चैलेंज ऑफ एजुकेशन : ए पॉलिसी पर्सपेक्टिव, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन,* नई दिल्ली।
3. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति,* 1986, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (पुनरीक्षा समिति),* 1990, भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. *शिक्षा बिना बोझ के* (प्रो. यशपाल समिति), 1993, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. Channaveer R.M., 2010. *"Social and economic perspectives of student unrest,"*Journal of Global Economy, Research Centre for Social Sciences,Mumbai, India, vol. 6(2), pages **149-159**, April

7. Anjum, Shahana; Aijaz, Asiya (2014) *Students unrest: Causes and remedies*, Indian Journal of Health & Wellbeing. 2014, Vol. 5 Issue 6, p**767-769.** 3p.
8. Puja, Mondal, *Essay on Student Unrest in India,* http://www.yourarticlelibrary.com/essay/essay-on-students-unrest-in-india/39223
9. Student Unrest on Campus: Recommended Preparation and Response (December 2015) https://www.edurisksolutions.org/Templates/template
10. blogs.aspx?pageid=47&id=2689&blogid=100